CHAPTER-VII

बकस्य प्रतिकारः

2 MARK QUESTIONS

1. उच्चारणं कुरुत-(उच्चारण कीजिए-)

		RBSESolutions.in		
अन्यत्र	च	प्रात:	सायम्	
अत्र	एकदा	ह्य:	कुत:	
कुत्र	कदा	श्व:	एव	
तत्र	तदा	अद्य	अधुना	
यत्र	यदा	अपि	अहर्निशम्	

उत्तरम् :

[नोट-उपर्युक्त अव्ययों का अर्थ जानकर शुद्ध उच्चारण कीजिए।]

2. मञ्जूषातः उचितम् अव्ययपदं चित्वा रिक्तस्थानं पूरयत

(मञ्जूषा से उचित अव्यय पद चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-) अद्य अपि प्रातः कदा सर्वदा अधुना

उत्तरम् :

- (क) प्रातः भ्रमणं स्वास्थ्याय भवति।
- (ख) सर्वदा सत्यं वद।
- (ग) त्वं कदा मातुलगृहं गमिष्यसि?
- (घ) दिनेशः विद्यालयं गच्छति, अहम् अपि तेन सह गच्छामि।

SANSKRIT

- (ङ) अधुना विज्ञानस्य युगः अस्ति।
- (च) अद्य रविवासरः अस्ति।

3.प्रश्न:-

एकपदेन प्रश्नान् उत्तरत -

- (क) शृगालस्य निमन्त्रणेन कः प्रसन्नः अभवत्?
- (ख) शृगालः बकाय क्षीरोदनं कस्मिन् अयच्छत्?
- (ग) स्वभावेन शृगालः कीदृशः आसीत्?
- (घ) केन वञ्चित: बकः अचिन्तयत्?
- (ङ) शृगालः सायं कस्य निवासं भोजनाय अगच्छत्?

उत्तराणि:

- (क) बकः
- (ख) स्थाल्याम्
- (ग) कुटिल:
- (घ) शृगालेन
- (ङ) बकस्य।

5 MARK QUESTIONS

1.अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तरं लिखत - (अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-) (क) शृगालस्य मित्रं कः आसीत्? (गीदड का मित्र कौन था?)

उत्तरम् :

शृगालस्य मित्रं बकः आसीत्। (गीदड़ का मित्र बग्ला था।)

(ख)स्थालीतः कः भोजनं न अखादत्? (थाली से किसने भोजन नहीं खाया?)

उत्तरम् :

स्थालीत: बकः भोजनं न अखादत्। (थाली से बगुले ने भोजन नहीं खाया।)

(ग) बकः शृगालाय भोजने किम् अयच्छत्? (बगुले ने गीदड़ को भोजन में क्या दिया?) उत्तरम् :

बकः शृगालाय भोजने क्षीरोदनम् अयच्छत्। (बग्ले ने गीदइ को भोजन में खीर दी।)

(घ) शृगालस्य स्वभावः कीदृशः भवति? (गीदड़ का स्वभाव कैसा होता है?)

उत्तरम् :

शृगालस्य स्वभावः कुटिलः भवति। (गीदइ का स्वभाव क्टिल होता है।)

2. पाठात् पदानि चित्वा अधोलिखितानां विलोमपदानि लिखत -(पाठ से पदों को चुनकर.अधोलिखित के विलोम पद लिखिए-) यथा - शत्रुः - मित्रम् उत्तरम् :

- सुखदम् दु:खदम्
- दुर्व्यवहारः सद्व्यवहारः
- शत्र्ता मित्रता
- सायम् प्रातः

उत्तरम् :

- अप्रसन्नः प्रसन्नः
- असमर्थः समर्थः

3.षातः समुचितपदानि चित्वा कथा पूरयत (मञ्जूषा से समुचित पदों को चुनकर कथा को पूरा कीजिए-)
[मनोरथैः पिपासितः उपायम् स्वल्पम् पाषाणस्य कार्याणि उपरि सन्तुष्टः पातुम् इतस्ततः कुत्रापि]

एकदा एकः काकः पिपासितः आसीत्। सः जलं पातुम् इतस्तततः अभ्रमत्। परं कुत्रापि जलं न प्राप्नोत्। अन्ते सः एकं घटम् अपश्यत्। घटे स्वल्पम् जलम् आसीत्। अतः सः जलम् पातुम् असमर्थः अभवत्। सः एकम् उपायम् अचिन्तयत्। सः पाषाणस्य खण्डानि घटे अक्षिपत्। एवं क्रमेण घटस्य जलम् उपरि आगच्छत्। काकः जलं पीत्वा सन्तुष्टः अभवत्। परिश्रमेण एव कार्याणि सिध्यन्ति न तु मनोरथैः।

4. तत्समशब्दान् लिखत -(तत्सम शब्द लिखिए-) यथा - सियार शृगालः उत्तरम् :

- कौआ काकः
- मक्खी मक्षिका
- बन्दर वानरः
- बगुला बकः
- चोंच चञ्चुः
- नाक नासिका

5.प्रश्न :

अधोलिखितप्रश्नानाम् उत्तराणि विकल्पेभ्यः चित्वा लिखत

- (i) शृगालस्य बकस्य च का आसीत्?
- (अ) मित्रता
- (ब) शत्रुता
- (स) घृणा
- (द) ईर्ष्या

उत्तरम् :

(अ) मित्रता

- (ii) बकः भोजनाय कस्य निवासम् अगच्छत्?
- (अ) काकस्य
- (ब) सिंहस्य
- (स) शृगालस्य
- (द) मूषकस्य

उत्तरम् :

(स) शृगालस्य

SA	N	C	K	R	IT
- 7 <i>H</i>	ıv		N	\mathbf{n}	

उत्तरम् :

(3) ਕੜ੍

(iii) शृगालस्य स्वभावः कीदृशः आसीत्?
(अ) प्रियः
(ब) कुटिलः
(स) विनमः
(द) सरलः
उत्तरम् :
(ब) कुटिलः
(iv) "आवाम् सहैव खादाव:"-रिक्तस्थानं पूरयत।
(अ) १वः
(ब) अधुना
(स) ह्यः
(द) यथा
उत्तरम् :
(ब) अधुना
(v) बकः प्रसन्नः। रिक्तस्थानं पूरयत।
(अ) अभवताम्
(ब) अभवन्
(स) अभवम्
(द) अभवत्
उत्तरम् :
(द) अभवत्
(vi) 'अभक्षयत्' इत्यत्र कः लकारः?
(3) ਕਝ੍
(ब) लट्
(स) लृट्
(द) लोट

6.प्रश्न: -

पूर्णवाक्येन प्रश्नान् उत्तरत

(क) बकः शृगालाय कस्मिन् क्षीरोदनम् अयच्छत्?

उत्तरम् :

बकः शृगालाय सङ्कीर्णम्खे कलशे क्षीरोदनम् अयच्छत्।

(ख) बकः कलशात् केन क्षीरोदनम् अखादत्?

उत्तरम् :

बकः कलशात् चञ्च्चा क्षीरोदनम् अखादत्।

(ग) शृगालस्य मुखं कस्मिन् न प्राविशत्? उत्तरम् :

शृगालस्य मुखं कलशे न प्राविशत्।

(घ) आत्मद्रव्यवहारस्य फलं कीदृशं भवति?

उत्तरम् :

आत्मदुर्व्यवहारस्य फलं दु:खदम् भवति?

7.प्रश्न:

'बकस्य प्रतीकारः' इति कथायाः सारं हिन्दीभाषया लिखत।

उत्तर :

कथा का सार-प्रस्तुत कथा के अनुसार किसी वन में गीदड़ और बगुला रहते थे। वे दोनों मित्र थे। एक बार गीदड़ ने भोजन का निमंत्रण बगुले को दिया। गीदड़ कुटिल स्वभाव का था। जब प्रसन्नतापूर्वक बगुला गीदड़ के निवास पर गया तब गीदड़ ने थाली में बगुले को खीर देते हुए कहा कि "हम दोनों इसी बर्तन में साथ ही भोजन करेंगे।" भोजन के समय बगुला अपनी चोंच से थाली में से भोजन ग्रहण करने में असमर्थ होकर केवल देखता ही रहा तथा गीदड़ सारी खीर खा गया।

गीदड़ से ठगे हुए बगुले ने सोचा कि इसने मेरे साथ जैसा व्यवहार किया है, मैं भी इसके साथ वैसा ही व्यवहार करूंगा। ऐसा सोचकर बगुले ने भोजन हेतु गीदड़ को निमन्त्रण दिया। गीदड़ प्रसन्न होकर अगले दिन बगुले के निवास पर पहुँचा। तब बगुले ने गीदड़ को एक संकुचित (तंग) मुख वाले घड़े में खीर देते हुए कहा कि-"हे मित्र! हम दोनों

इसी बर्तन में साथ ही भोजन करेंगे।" बगुला चोंच से सारी खीर को खा गया, किन्तु गीदड का मुख उस घड़े में नहीं आया और वह ईर्ष्या से देखता रहा। इस प्रकार बगुले ने गीदड के साथ वैसा ही व्यवहार करके बदला ले लिया। शिक्षा-दुर्व्यवहार का फल दु:खदायी होता है। अतः सुख चाहने वाले मनुष्य को हमेशा सद्व्यवहार करना चाहिए।